Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

हिन्दी का वैश्विक स्वरूप

Dr. Tabassum Khan*

Head of Hindi Department, Hindi Department, Shri Satya Sai Technology and Medical Sciences, University, Sehore, Madhya Pradesh

***सार** – मुझे इस बात पर गर्व है कि हमारी हिन्दी भाषा का पठन-पाठन विश्व के लगभग सभी देशों में हो रहा है। सन् 1975 में विश्व का पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन नागपुर में हुआ था जिसमें विश्व के विभिन्न देशों के हिन्दी के अनेक मूर्धन्य विद्वानों के साथ ही भारत के अनेक हिन्दी भाषी और अहिन्दी भाषी हिन्दी के साहित्यकारों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन का आयोजन बहुत ही अच्छा और प्रमाणित रहा था। इसे भाग लेने देश-विदेशों के विद्वानों ने बड़ी आतुरता से हिन्दी में हिन्दी के लिए अपने विचार व्यक्त किये थे। सारा वातावरण हिन्दी की प्रशंसा और उसके जयगान से ध्वनित हो रहा था। इस सम्मेलन से ही अधिकांश हिन्दी वालों को पहली बार इस बात का पता चला था कि हिन्दी विश्व के किन-किन देशों में लोकप्रिय है और पठन-पाठन की भाषा बनी हुई हैं। ये बात अलग है कि आज हिन्दी अपने ही घर में अतिथि बनी हुई है किन्तु देश और विदेश में इनका प्रचार और प्रसार अपनी चरम सीमा पर है। मारीशस के विद्यालयों में हिन्दी पढायी जाती है। साप्ताहिक हिन्दुस्तानी साप्ताहिक जनता और जमाना पत्र हिन्दी में प्रकाशित होते है। वहां के प्रसिद्ध साहित्यकार सोमदत्त बखेरी, अनंत अभिमन्यु आदि की हिन्दी रचनाऐं वहां के स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त भारत की धर्मयुग "सारिका" जैसी पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होती रहती है।*

---------------------------------x--------------------------------

फीजी सूरीनाम गुयाना आदि द्वीपों में बसे हुए हिन्दी-भाषी भी हिन्दी के प्रति अमित अनुराग रखते हैं। सूरीनाम के अधिकांश विद्यालयों में हिन्दी पढ़ायी जाती है जिनमें राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के पाठ्यक्रम को लागू किया गया है, गुयाना में प्रतिवर्ष लगभग सात सौ विद्यार्थी हिन्दी की विभिन्न परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं, इन देशों में हिन्दी विषय पढ़ाने के लिए हजारों शिक्षक इन देशों में जाते हैं।

यूरोपीय देशो में हिन्दी की लोकप्रियता रूस, पूर्वी जर्मनी, पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस, इटली, चेकोस्लोवालिया, पौलेण्ड, हालैण्ड, इंग्लैण्ड, यूगोस्लोविया, हंगरी आदि यूरोप के अनेक देशों में हिन्दी के अध्ययन और अध्यापन पर जोर दिया जाता है और यहां अध्ययन और अध्यापन कार्य किया जाता हैं। इन देशों में भारत से गये हिन्दी के अनेक अध्यापक हिन्दी के क्षेत्र में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। रूस में हिन्दी बहुत लोकप्रिय है। रूसी छात्र, छात्रायें हिन्दी का अध्ययन बहुत ही आनंद के साथ करते हैं। रूस में आज हिन्दी के इतने और ऐसे रूसी विद्वान है जो हिन्दी के विश्वविद्यालय स्तर तक के अध्यापन कार्य स्वयं करते है। उन लोगों ने रूसी-हिन्दी और हिन्दी-रूसी शब्दकोश, व्याकरण विभिन्न पुस्तकें लिखी और प्रकाशित की हैं। रूस के प्रसिद्ध, हिन्दी-विद्वान पी. ए. वराभिकोण ने तुलसी के "रामचरित मानस" का रूसी भाषा में सुन्दर अनुवाद भी किया था।

चेकोस्लोवालिया भी यूरोप में हिन्दी का एक प्रधान गढ़ है। वहां के प्राध विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की सुचारू व्यवस्था है। डॉ. स्मेकल हिन्दी में अध्यापन कार्य करते हैं और उन्होंने हिन्दी में साहित्य, व्याकरण आदि संबंधी पुस्तकें भी लिखी है। जर्मन राज्यों में भी हिन्दी के प्रति आकर्षण है। जमीनी में व्याकरण के सरल पाठ, उच्चतर पाठ्य पुस्तकें तथा फ्रांसीसी से हिन्दी में और हिन्दी से फ्रांसीसी में अनुवाद होते रहते हैं। इटली में भी हिन्दी के प्रति आकर्षण है।

उत्तरी अमेरिका के संयुक्त राज्य अमेरिका और मैक्सिको में हिन्दी के अध्ययन और अध्यापन की सुचारू व्यवस्था है। कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्यापन कार्य होता है। यहां हिन्दी और हिन्दी भाषा को साहित्य के एक रूप में पढाया जाता है। यहां शोध कार्य भी होते हैं।

एशिया महाद्वीप और हिन्दी – एशिया में जापान, वर्मा, दक्षिण कोरिया, उत्तरी कोरिया, श्रीलंका, नेपाल, आदि देशों

www.ignited.in

में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन हो रहा है। जापान के पांच वि.वि.में हिन्दी का अध्यापन कार्य हो रहा हैं।

इन देशों के अतिरिक्त अफगानिस्तान, डेनमार्क, चीन, ईरान, आस्टेªलिया, बेल्जियम आदि देशों में हिन्दी शिक्षण की व्यवस्था है। दक्षिण कोरिया में हिन्दी की पढाई आरंभ हुए अभी बीस-पच्चीस वर्ष ही बीते हैं परन्तु वहां सैकड़ो, छात्र-छात्राऐं हिन्दी पढ़ने में व्यस्त है। भारतीय नृत्य नाटक और संगीत के प्रति भी वहां विशेष अभिरूचि मिलती हैं। उत्तरी कोरिया में भी हिन्दी को ऐसी ही लोकप्रियता प्राप्त हैं।

अतः स्पष्ट है हिन्दी भाषा और उसका साहित्य संसार के विभिन्न प्रमुख देशों में अध्ययन अध्यापन का विषय बने हुए हैं, विभिन्न देशों में हिन्दी का अध्यन दो कारणों से किया जा रहा है। विश्व के भाषा शास्त्री भारतीय भाषाओं में हिन्दी को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते है। इसी कारण भाषा शास्त्र की दृष्टि से उसका अध्ययन और विश्लेषण करते है। विदेशों में हिन्दी के साथ ही उसकी विभिन्न विभाषाओं और बेटियों का अध्ययन करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है और यह सारा काम हिन्दी को बिना जाने नहीं हो सकता। इसी कारण इन देशों में हिन्दी पढ़ी और पढाई जाती है। कुछ देशों में भारत के प्रति हिन्दी के प्रति आकर्षण है। वहां के लोग भारत के इतिहास, संस्कृति और सभ्यता का अध्ययन करना चाहते है और इसके लिए हिन्दी भाषा और उसके साहित्य को एक प्रमुख साधन मानते हैं। साथ ही हिन्दी के माध्यम से भारतीयों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने के इच्छुक हैं। यह प्रकृति यूरोप के रूस आदि साम्यवादी देशों में अधिक देखने को मिलती है। इसी कारण इन देशों में हिन्दी के पठन-पाठन की विशेष व्यवस्था की गयी है। विदेशों के लोग अंग्रजी को भारत की सम्पर्क भाषा न मानकर हिन्दी को ही मानते है। विदेशों में हिन्दी का प्रचार और भी अधिक बढ़ सकता है। यदि हमारे विदेशों में स्थित दूतावास अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी का व्यवहार करना आरंभ कर दे।

हिन्दी का प्रचार- राष्ट्रीय स्तर पर भारत में हिन्दी का प्रचार दो माध्यमों द्वारा हो रहा है। पहला माध्यम है सरकार द्वारा किया जा रहा प्रचार। जैसे विभिन्न केन्द्रीय मंत्रालयों में हिन्दी का अधिकाधिक व्यवहार करने की प्रोत्साहन दिया जा रहा है। रेल, डाक-तार आदि विभागों में हिन्दी का व्यवहार बड़ी मात्रा में होने लगा है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय हिन्दी के विभिन्न विषयों से संबंधित परिभाषिक कोष तैयार करने में सरकारी काम काज में हिन्दी को अधिक लोकप्रिय और व्यवहारिक रूप प्रदान करने में प्रयत्नशील है।

हिन्दी प्रचारक संस्थाऐं- भारत के लगभग प्रत्येक राज्य में एक या अधिक ऐसी संस्थाऐं हिन्दी का प्रचार कर रही है जो अपने राज्य के लोगों को हिन्दी सिखाती है तथा हिन्दी को लोकप्रिय बनाने का प्रयत्न कर रहे है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद, महाराष्ट्र, राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, असम राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार सभा, अखिल भारतीय हिन्दी संस्था संघ दिल्ली नागरी प्रचारिणी सभा, विहार राष्ट्रभाषा केन्द्रीय महोदय, हिन्दी परिषद, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा आदि संस्थाऐं हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए कार्य कर रही है। इस तरह हिन्दी भारत की ही नहीं सम्पूर्ण विश्व की भाषा हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास - राजनाथ शर्मा

2. हिन्दी साहित्य का इतिहास – डॉ. नगेन्द्र

3. हिन्दी साहित्य का स्वरूप

Corresponding Author

Dr. Tabassum Khan*

Head of Hindi Department, Hindi Department, Shri Satya Sai Technology and Medical Sciences, University, Sehore, Madhya Pradesh